KIJAHS/JUL-SEP2016/VOL-3/ISS-3/A58 ISSN:2348-4349
IMPACT FACTOR(2016) – 6.8712

KAAV INTERNATIONAL JOURNAL OF ARTS,HUMANITIES

& SOCIAL SCIENCES

संवेदनात्मक अनुभूति की अभिव्यक्ति और नंदकिशोर आचार्य

मुकेश कुमार शर्मा
शोधार्थी हिन्दी विभाग, मोहनलाल सुखाड़िया
विश्वविद्यालय, उदयपुर

'अज्ञेय' द्वारा सम्पादित चौथा तार सप्तक (1979)[1] में राजस्थान के इकलौते कवि, जिन्होंने समकालीन कविता में अपनी संवेदनशील अनुभूति के साथ–साथ सांस्कृतिक विघटन को मूल्य संकट एवं संक्रमण हताशा, अजनबीपन, एकाकीपन, यांत्रिकता इत्यादि प्रवृत्तियों का समावेश किया हैं। आधुनिकता, प्रेम, दर्शन और ज़िन्दगी की बहुमुखी अनुभूतियों का विविध आयामी विधान अपने समकालीन एवं सहयात्री कवियों के नंदकिशोर आचार्य का काव्य–संसार विशिष्ट एवं भिन्न किस्म का हैं। 31 अगस्त, 1946 बीकानेर में जन्में आचार्यजी छोटी कविताओं में सूक्ष्म अभिव्यंजना को भी साकार रूप प्रदान किया है।

आचार्यजी ने अपने विद्यार्थी जीवन में ही 'तथागत' उपन्यास लिखा जो उसी समय प्रकाशित भी हुआ। अज्ञेय द्वारा सम्पादित चौथा सप्तक के कवियों में इन्हें मध्य स्थान प्राप्त हुआ है जो इनकी रचनाशीलता के गांभीर्य को उजागर करता है। इसमें सर्वाधिक 31 कविताएँ आचार्यजी की हैं। बहुमुखी प्रतिभा के धनी का लेखन कर्म काव्य, आलोचना, नाटक, सम्पादन, स्तम्भ लेखन एवं सामाजिक सरोकारों आदि में गद्य के माध्यम से प्रकट करने वाले प्रतिबद्ध सामाजिक के रूप में देखा जाता है। इनकी काव्य–यात्रा 'जल है जहाँ' (1980) से प्रारम्भ होकर क्रमशः 'वह एक समुद्र था' (1982), 'शब्द भूले हुए' (1987), 'आती है जैसे मृत्यु' (1990), 'कविता में नहीं है जो' (1995), 'अन्य होते हुए' (2007), 'चाँद आकाश गाता है' (2008), 'गाना चाहता है पतझड़' (2010), 'केवल एक पत्ती ने '(2011), 'इतनी शक्लों में अदृश्य' (2012), 'छीलते हुए अपने को' (2013), 'मुरझाने को खिलाते हुए' (2014), 'आकाश भटका हुआ' (2015), 'हवा की मंज़िल नहीं कोई' (2016) आदि तक अनवरत रूप में चलती रही है।

कविता लेखन आचार्यजी के लिए शस्त्र युद्ध से भी बड़ा है क्योंकि यह कभी हारती नहीं, हराती है– ''कविता के द्वारा लड़ी गई लड़ाई किसी भी शस्त्र युद्ध से अधिक सार्थक है क्योंकि शस्त्र तो हार सकते है पर कविता अपनी लड़ाई कभी नहीं हारती क्योंकि उसे किसी दूसरी कविता में लड़ना नहीं होता–उसे विरोधी परिस्थितियों के बीच अपने समान की काव्य संवेदना को, जो उस समाज की अस्मिता का ही एक रूप है, न केवल बचाये रखना बल्कि पुष्ट करते रहना होता है।''[2] कविता अपनी आस्मिता की तलाश को जारी रखते हुए विरोधाभास के गहन वन में पगडंडियों की तलाश करके उन्हें रास्ते बनाने की ओर निरन्तर प्रयासरत रहती है।

आलोचना की पुस्तक 'अज्ञेय की काव्यतितीर्षा' [2001 (1970)] में बताया गया है कि काव्य की समालोचना उन्हीं के काव्यों के साक्ष्य के आधार पर की जानी चाहिए न की बने–बनाएँ ढाँचे में फिट करके रचना या रचनाकार को प्रासंगिक या अप्रासंगिक बनाया जाये। इस रचना से आचार्यजी को समग्र दृष्टि के आलोचक के रूप में भी ख्याति प्राप्त हुई। इसके पश्चात् साहित्यिक आलोचना संबंधी पुस्तकों में– 'रचना का सच' (1986, के. के. बिड़ला फाउण्डेशन का 'बिहारी पुरस्कार'), 'सर्जक का मन' (1989), 'सभ्यता का विकल्पः गांधी दृष्टि का पुनराविष्कार' (1995), 'संस्कृति का व्याकरण' (1997), 'आधुनिक विचार' (1998), 'साहित्य का

Copyright © 2016 Published by kaav publications. All rights reserved

स्वभाव' (2001), 'मानवाधिकार के तकाजे' (2003), 'संस्कृति की सामाजिकी' (2005), 'संस्कृति की सभ्यता' (2007, 2014) 'लेखक की साहित्यिकी' (2008), 'साहित्य का अध्यात्म' (2009), 'अनुभव का भव' (2009), 'शिक्षा का सत्याग्रह' (2009), 'संस्कृति की आर्थिकी' (2010) 'सत्याग्रह की संस्कृति' (2010), 'स्वराज के सवाल' (2012), 'रचना का अंतरंग' (2012) इत्यादि प्रमुख है।

आचार्यजी के नाटक संकलनों में 'देहान्तर' ('देहान्तर', 'किमिदम् यक्षम्') (1987), 'रंगत्रयी' ('गुलाम बादशाह' / 'हस्तिनापुर' / 'जूते') (1996), 'नट तृतीया' ('किमिदम् यक्षम्' / 'पागलघर' / 'किसी और का सपना') (2001); 'ज़िल्ले सुब्हानी' (2008) इनके अतिरिक्त 'बापू' (2005) को सम्मिलित करते हुए 'रंग–यात्रा' (2014) के नाम से सभी नाटकों को एक पुस्तकाकार रूप में सूर्य प्रकाशन मंदिर, बीकानेर से प्रकाशित किया गया है। 'नाट्यानुभव' (2004) शीर्षक से नाटक के विभिन्न सरोकारों पर विस्तार से चिंतन किया गया है। ''डॉ. नंदकिशोर आचार्य को संगीत नाटक अकादमी, दिल्ली ने वर्ष 2015 के संगीत नाटक अकादमी अवार्ड से सम्मानित करने की घोषणा 2 अप्रेल 2016 को की गई।''

आचार्यजी के रचनाकर्म की विशेषताओं एवं मानवीय उपादेयता को ध्यान में रखते हुए विभिन्न संस्थाओं, अकादमियों द्वारा समय–समय पर सम्मानित किये जाना इनकी सामाजिक प्रतिबद्धता के वैशिष्ट्य को उजागर करता है। राजस्थान साहित्य अकादमी, उदयपुर के सर्वोच्च 'मीरा सम्मान' ('वह एक समुद्र था' काव्य (1982) को 1986–87 वर्ष के लिए) से पुरस्कृत किया गया। 'रचना का सच' (1986) निबंध संग्रह को के. के. बिड़ला फाउण्डेशन का चौथा 'बिहारी पुरस्कार' वर्ष 1994 के लिए, 'अखिल भारतीय प्ले लेखक सम्मान', भुवनेश्वर सम्मान, 'संगीत नाटक अकादमी पुरस्कार', 'भुवालका पुरस्कार' (2001), 'साहित्य सम्मान', 'रेत–राग' के लिए (वर्ष 2003–04 का) एफ. आई. पी. अवार्ड, मध्यप्रदेश राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, भोपाल द्वारा वर्ष 2009 का ('संस्कृति की सामाजिकी' नामक चर्चित ग्रंथ के लिए) 'नरेश मेहता स्मृति वाङ्मय सम्मान', 'सुब्रह्मण्यम् भारती पुरस्कार' (2011), महाराणा मेवाड़ फाउण्डेशन, उदयपुर द्वारा 'महाराणा कुम्भा सम्मान' (2012) इत्यादि से सम्मानित किया जा चुका है जो इनके रचना संसार की श्रेष्ठता को प्रमाणित करता है। ''प्रयास संस्थान चुरू की ओर से 2016 का प्रतिष्ठित डॉ. घासीराम वर्मा पुरस्कार कविता संग्रह 'आकाश भटका हुआ' के लिए दिया गया।'' (दैनिक भास्कर, उदयपुर, संस्करण, 31.08.2016, पृ. सं. 4)

नंद किशोर आचार्य ने अज्ञेय और छगन मोहता जैसे साहित्यिक व्यक्तियों के मार्गदर्शन में रहकर अलग पहचान बनाते हुए अपनी आवाज में विकासात्मक प्रवृति को बढ़ाया है। आचार्य के लेखन में 'ग्रे' और 'अछूते अचेतन क्षेत्र' की मिथकों, किवंदतियों और इतिहास की पड़ताल, मानवीय संवेदनशीलता का प्रकटीकरण और समकालीन सामाजिक और राजनीतिक परिदृश्य को बेंधकर, अपनी कविताओं में सुगंध की तरह व्याप्त करके अनुभूतियों को अपनी अभिव्यक्ति की अतल अनुभवात्मकता शैली के माध्यम से नीले वितान में अवतीर्ण करने का महत्त्वपूर्ण कार्य किया है। इनमें किलों, हवेलियों, चौराहों, संकरी गलियों, खिड़कियों मनोगत भावों व परिस्थितियों तथा रेगिस्तान इनकी कविताओं में इतनी खूबसूरत हवा की तरह प्रवाहित हो रहे हैं कि अज्ञेय ने नंद किशोर आचार्य को 'जंगल की खुबसूरती के अनुकरणीय कवि' से नवाजा हैं। यह इनकी विशिष्ट लेखन शैली में मील का पत्थर है।

डॉ. हरदयाल की सम्मति में ''हिन्दी में रेगिस्तान को लेकर किसी दूसरे कवि ने ऐसी मार्मिक कविताएँ नहीं लिखी है.... समकालीन हिन्दी कविता में नंद किशोर आचार्य जैसी कलात्मक कविताएँ लिखने वाले कवि विरल है।''

राजकमल राय :– *''उनकी काव्य यात्रा निरन्तर एक भाषा सिद्धि की ओर बढ़ने वाली यात्रा रही है जो उन्हें अपने समकालीनों से अलग करती है।''*

संवेदनात्मक अनुभूति की अभिव्यक्तिः एक परिचय

नंद किशोर आचार्य मानते है कि– ''कविता वस्तुतः एक निरन्तर सांस्कृतिक यात्रा है जिसमें मानव चेतना, जीवन के नवमूल्यों का अन्वेषण करने का प्रयास करती है किन्तु यह यात्रा वायवीय नहीं, यथार्थ के धरातल पर होती है।''[3]

मूलतः संवेदना का अर्थ है– ''ज्ञानेन्द्रियों द्वारा प्राप्त अनुभव अथवा ज्ञान; किन्तु आज सामान्यतः इस शब्द का प्रयोग सहानुभूति के अर्थ में होने लगा है।''[4]

Copyright © 2016 Published by kaav publications. All rights reserved

साहित्य में अभिव्यक्ति के दो अर्थ है– ''(1) किसी आन्तरिक अनुभव, भाव, विचार, आकांक्षा आदि का बाह्य प्रकाशन और (2) किसी एक वस्तु द्वारा किसी दूसरी वस्तु का संकेत।''[5]

अभिव्यक्ति के तीन तत्व है–

(i) अभिव्यंग्य/व्यंग्य – जिसकी अभिव्यक्ति होनी है।

(ii) अभिव्यंजक/व्यंजक – जो व्यक्त करता है।

(iii) अभिकरण / वक्ता – जिस अभिकरण से अभिव्यक्ति की जाती है।

सान्तायना का मत है कि ''व्यंग्य और व्यंजक में एक संश्लेषणात्मक सम्बन्ध है, जिसके कारण व्यंजक के द्वारा व्यंग्य संकेतिक होता है।''[6] समकालीन कवि नंद किशोर आचार्य के काव्य में प्रयुक्त संवेदनात्मक अनुभूति एवं अभिव्यक्ति पक्ष को निम्न बिन्दुओं/विशेषताओं के आधार पर वर्णित किया जा सकता है–

(1) लयात्मक सम्मोहन :–

समकालीन कविता में लय का विशेष महत्त्व रहा है। मुक्त छंद की आत्मा लय को ही माना जाता है। इसी प्रवृत्ति के प्रभाव स्वरूप जापान में प्रचलित 'हाइकू' की प्रवृति एवं आकार–प्रकार की समरसता से आप्लावित छोटी–छोटी कविताओं में रचनाकार द्वारा ध्वनि को ऐसा साधा गया है कि पाठक उनके लयात्मक सम्मोहन में बंध कर मन ही मन उसके आशय का आत्मिक आनंद लेता प्रतीत होता है। कवि अपनी चुनी हुई संवेदनाओं को शब्द–रेखाओं, जीवन के मर्म एवं सत्य को प्रवाहित करते हुए बीकानेर पर केन्द्रित कविता में आत्मक आनंद को वर्णित करते हुए लिखते हैं कि–

''तंग गली की छाया में, / पत्थर की चौकी:/
दो जन खेल रहे है चरभर–/एक चल रहा चाल/
दूसरा मनोयोग से/ मिला रहा/ज़र्दे में चूना।''[7]

(2) मानवीय मूल्यों की रचना एवं भाषिक संरचना :–

आचार्यजी ने अपनी कविताओं के माध्यम से मानवीय मूल्यों की रचना की है जो अपनी सतह पर अपनी ही तरह से भाषा को खंगालने का कार्य करती है। इसमे रचनाकार के विचारों, प्रश्नों, मूल्यों, दुविधाओं आदि का विन्यास प्रस्तुत हुआ है जिसमें जीवन–जल की शोध सन्निहित है। इसी कारण इनकी काव्य भाषा प्रचलित मुहावरों, रूढ़ियों, उक्ति वैचित्र्य इत्यादि से लगभग मुक्त रही है। ठेठ गद्य की लय, गीति तत्व का अद्‌भुत संयोग ने इनके काव्य को अनावश्यक अलंकारो से दूर रखा गया है। मानवीय मूल्यों की गहन अभिव्यक्ति होने से कम शब्दों में बहुत कुछ करने की सामर्थ्य आ गयी है। जैसे–

''चारों और फैली रेत–सी हो/या बज़री सी हो/जितनी रखी तपिश/
दीखती रहती है हर वक्त/शहर के चेहरे पर–/
उतना ही शीतला और मीठा है/ अन्तस्तल की गहरी बावड़ियाँ,/
कुंडों और कुओं का जल।''

इनकी कविताओं में राजस्थान की मरुभूमि, प्रकृति एवं स्थलरूपों की छाप सहज ही देखी जाती है। मामूली से लगने वाले दृश्य में भी इनकी प्रवृत्ति कुछ नयी अनुभूति प्राप्त करके मानव मन को तरो–ताज़गी प्रदान करती है–

'सूनेपन में अंकुर फूटा:
बोल रहा जल
रेतीली खामोशी में !'

Copyright © 2016 Published by kaav publications. All rights reserved

(3) काव्य फल :–

आचार्यजी मानवीयता के प्रति आकर्षण के कवि होने के कारण इन्होंने ने जीवनगत विफलताओं को भी पूर्ण रागात्मकता के साथ निभाते हुए अपने काव्य फलक को विस्तृत किया है। संवेदनाओं का मौन वरण, प्रेम के नश्वरात्मक स्वर, पारिस्थितिक चुभनात्मक सौन्दर्य, वर्तमान त्रासद उपस्थिति एवं रिश्तों की उतरती हुई रंगत इत्यादि को काव्य में स्थान देते हुए अपने काव्य फलक की सूक्ष्म अभिव्यंजना को विस्तीर्ण करते हुए लिखा है कि –

'मरो नहीं झरो! – कि पहाड़ भी/
मरे नहीं, सँवरे, झरे/मुझ में उतरे।/XXX
'तुम हो/क्योंकि मैं जो हूँ/लेकिन नहीं हूँ मैं/
क्योंकि तुम जो नहीं हो/न होने का होना भी/कोई होना है?'
('न होने का होना' कविता)

अनुभव की प्रौढ़ता, उदात्तता इनकी सम्पूर्ण काव्य–यात्रा में दिखायी देती है। इनकी कविता अनुभूति के आन्तरिक विमर्श की कविता है जहाँ उपस्थित और अनुपस्थित के मध्य एक गहरा संगीतात्मक एकलाप प्रस्तुत हुआ है जिसमें कवि, समय व समाज त्रयी एक साथ खड़े हुए दृश्यगत हुए है। आचार्यजी लिखते है–

'नहीं, कविता रचना नहीं,/सबूत है कि/मैनें अपने को रचा है/
मैं ही तो हो गया होता हूँ शब्द/फुफकारते समुद्र में लील लिया जाकर भी/सुबह के फूल–सा खिल आता हुआ।'

(4) ऐन्द्रियता का समावेश :–

आचार्यजी ने मानवीय इन्द्रियों को आधार बनाते हुए अनेक कविताएँ लिख कर हिन्दी की ऐन्द्रिक कविताओं में श्रीवृद्धि की हैं। यह ऐन्द्रिकता चेतनात्मक सन्दर्भों की खोज को रेखांकित करने वाली रही है। केवल संवेदना में बहकर लिखी गयी ऐन्द्रियता नहीं होकर उदात्तोन्मुख उतरदायित्वों को निर्वाहित करने वाली कविता रही है। काव्य इनके लिए घनीभूत भाव दृष्टि से अन्वेषण और विश्लेषण है अन्य का मार्गदर्शन नहीं।

'स्मृति नहीं है यह/किसी बीते हुए की
यह एक उपस्थिति है/खण्डहर की सही।'
(बारिश में खण्डहर' कविता)
'तपती दुपहर : / ऊँची हवेलियों की छाया में
ऊँघ रही ऊँची हवेलियाँ–/हॉफता, दौड़ रहा है शहर।'
('दुपहर' कविता)

(5) प्रकृति चित्रण में मातृ–स्मृति की छटा :–

सामान्य भारतीय मनुष्य की प्रकृति परायणता को आचार्यजी ने प्रकृति चित्रण के माध्यम से रागदीप्त करके शान्त स्मरण शैली में आत्म सजग नागरिकों की युगीन परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए उत्तर प्रौद्योगिकी युगीन समय में भी परम्परागत भारत की पृष्ठभूमि को आत्मसात करते हुए अपनी गहन अनुभूति को सार्थक पहचान देकर मानव स्मृति में बसी हुई मातृ–स्मृति को प्रस्तुत करते हुए लिखा है कि –

'झर आता है दूध / पहाड़ी की छाती से
चिपटी हुई घास / पीती है आँख मून्दे
कोरो से बह आती है बूंदे ....'

(6) मानवीय अस्तित्व का गरिमामय संस्थापन :–

अस्तित्ववादी विचारधारा का प्रभाव आचार्यजी की काव्यानुभूति पर भी दिखाई दिया है। उनके काव्य में मानवीय उपस्थिति को अपनी सघन संवेदना और मुधुर कल्पना के अद्भुत रूप से समाहित किया गया है यह मन को एकाकार करने का कार्य किया है–

Copyright © 2016 Published by kaav publications. All rights reserved

'दीठ तक फैला/जल का विस्तार/शान्त, गहरा, निर्मल/
आते–जाते ताक–झाँक कर जाते/मेघ धवल–श्यामल/
जल के नीचे झलक रही घास/हरी, कोमल .....'

आचार्यजी की अस्तित्वादी विचारधारा को इस कविता में देखा जा सकती है–

'ठीक है माना/अनन्त नहीं है यह सागर/किनारा है कहीं तो/और अनन्त हम/
पहुँच भी जायेंगे ही/तो क्या/जब तुम भी वहीं होंगे/और में भी'?

('तो क्या', कविता)

उपर्युक्त उदाहरणों में कवि की संवेदना का सम्प्रेषण अस्तित्ववादी चिंतन के रूप में प्रस्तुत होता है।

(7) कविता में आमुखीकरण एवं एकाकारिता :–

आचार्यजी की कविताओं में जीवनगत विभिन्न प्रवृत्तियों को प्रस्तुत करने में अपने फक्कड़पन के साथ–साथ मानवीय संवेदनाओं के आमुखीकरण का समावेश हुआ है जिसमें जन सामान्य के ज़हन में दबी, घुटी साँसें खुले आकाश में प्रस्फुटित अनुभूत हुई होती है। एक ही नगर में रहने वाले व्यक्तियों में विद्यमान जीवन्तता और मार्मिकता अपने प्रसार का पूरा अवसर प्राप्त कर एक ही नगर में रहने वाले मनुष्यों में पायी जाने वाली विषमता को चित्रित करते हुए लिखा है कि–

'कहीं भी समतल नहीं है शहर /
जहाँ वैसा दिखता भी है/वहाँ वह पुल नहीं है/
ढलान और चढ़ाई के बीच का पुल
थम कर जहाँ दो पल/लगाता है शहर ज़र्दा :
आराम से रखकर होठों के बीच/फिर पकड़ लेता रास्ता अपना
बेफ़िक्र, ठावस भरा–/हर क़दम जब/ या तो चढ़ाई है या उतराई।'

पुराने बीकानेर एवं पुराने जैसलमेर पर केन्द्रित कविताओं में समकालीनता एवं प्रासंगिकता को संवेदनात्मक तरीकों से प्रस्तुत करने का कार्य किया है। रचनागत मार्मिकता एवं संवेदनशीलता को अत्यधिक धैर्य के साथ उन वस्तुओं और जगहों को स्पर्श करते हुए लोक में उनकी उपस्थिति एवं संवेद्यता को सहज सरल रूप में वर्णित करके भी इनकी सार्थकता को सिद्ध एवं स्पन्दित करते लिखा है कि–

'अभी जीवित है यह शहर/सूखने पर जिस तरह मरता नहीं तालाब/
अपनी दीवारों पर छपी/काई की सूखी लकीरों/
और तल की फरी मिट्टी की आँखो में जीवित /XXX
पुरानी यादों–सी गन्धाती सीली हवा/सूने गोखों से ताक रही/
उजड़े दयार की आंखे/थी जो कभी–/जिनके कभी होने का यही अहसास/जब /तक है/तब तक शहर जीवित है।'

इन कविताओं मैं स्वयं कविता की सामर्थ्य पर कवि का विश्वास और गहरा हो जाता है। संलग्नता हो तो उसके समय में आते परिवर्तन न केवल रचना में प्रतिफलित होते हैं बल्कि गहरे होकर विचलित करते है, टिक जाते है, उसके भीतर को झकझोर कर है उससे संवाद करते है।

(8) काव्य–भाषा :–

आचार्यजी की काव्य भाषा सर्वाधिक संयमित बल्कि अधिकांशतः 'अधिकतम संभव संयम' के गुण से युक्त है। कविता में प्रत्येक शब्द, ध्वनि और विराम का सुचिन्तित एवं औचित्य पूर्ण प्रयोग है जिसमें कोई भी परिवर्तन सम्पूर्ण कविता के स्वरूप को नष्ट कर देगा। दार्शनिक विषय भाषा को उलझन में डालता है जिससे विषय सामान्य पाठक के लिए दुरूह हो जाता है लेकिन आचार्यजी के काव्य संग्रहों में ऐसी जटीलता नहीं है। लोक शब्दों का समावेश इनके काव्यों में हुआ है जैसे खंख, कनी, टीबा, रोइड़ा, बवलिया, रड़क तथा जगरा आदि। इनके स्थान पर दूसरे शब्द रखने से काव्य सौन्दर्य में ह्रास होगा। यही इनकी कविताओं में भाषागत संयोजन के वैशिष्ट्य को उजागर करता है। जैसे–

Copyright © 2016 Published by kaav publications. All rights reserved

'यो भटकती हो कनी?/ जब एक रेगिस्तान हो पसरा, चारों ओर
कनी! टीबा नहीं / रेगिस्तान बनकर रहो
सारे टीबों को समाए खुद में / निस्संग रेगिस्तान !'
('कविता में नहीं है जो')

(9) जल में जीवन की खोज एवं संघर्ष :–

आचार्यजी ने खण्डहर के बहाने मरुभूमि में जल शृंखला की कविताएँ ज्यादा सार्थक है क्योंकि वहाँ जल में जीवन की खोज और संघर्ष करने की प्रेरणा भी है। 'बचो पानी' इस रूप में मानवीय संघर्ष की एक प्रभावकारी कविता है–

''वह चाहे तरल हो और वह ठोस/पानी और पत्थर दोनों में/नहीं कोई थोथ/इसीलिए पत्थर पानी को मारता नहीं/धार देता है/पानी बदले में उसे संवार देता है/तभी तो फूटती है धार/और पानी ही नहीं/गूंजता झरता है पहाड़/मुझमें उतरता हैं/XXX इसलिए बचो पानी,/भरो नहीं झरो/कि पहाड़ भी/मरे नहीं, संवरे झरे/मुझमें उतरे!'' (बचो पानी (पृष्ठ 51) : बारिश में खण्डहर)

जल शृंखला की कविताओं में प्रमुख विशेषता यह है कि कवि ने राजस्थान के भूगोल को प्रस्तुत करने की सार्थक कोशिश की है। इन कविताओं में मरुभूमि की संघर्षपूर्ण गाथा में जल और वर्षा की उपस्थिति में जीने की ललक और प्रेम की अनन्त छवियों को संवेदना के धरातल पर अनुभव करते हुए लिखा है कि–

''बल्कि जल होना ही बहना है/और वह भी सदा बहता है/
खुद की ओर/इसलिए जल है जहां सागर भी वही है/
तो तुम्हारी आंख क्यों सागर नहीं है ?''[8]

(10) सांस्कृतिक अवमूल्यन और जीवन की यांत्रिकता का प्रस्तुतीकरण :–

मूल्य संक्रमण, अजनबीपन, कुंठा इत्यादि कई प्रवृतियों का समावेश कविताओं में किया गया है। यांत्रिकता से निकट का साक्षात्कार करते हुए यांत्रिकता से मुक्ति की आकांक्षा को प्रस्तुत किया है। कवि परिवेशगत सभी दबावों से मुक्त होकर नितान्त अपनी जिन्दगी जीना चाहता है इसलिए कवि का काव्य रचना का मंतव्य वर्तमान स्थिति को 'शीर्षासन' करवाने की भावना से अनुप्राणित है–

''काश शीर्षासन कर जाए यह स्थिति/और हम जिएं/
किसी एक्ट की धारा बनकर नहीं/ कविता की तरह/
कि हम/सुन्दर प्रेम में मढ़ा/कैमरा–चित्र न होकर/
भावोन्मेष के किसी क्षण में अंकित/टेढी–मेढी रेखा मात्र हों।''

(11) प्रणयानुभूतियों का सार्थक चित्रण :–

प्रणयानुभूतियों पर आधारित आकार–प्रकार में अपेक्षाकृत संक्षिप्त कविताएँ लिखी है। परिवेश और विविध जीवन संदर्भों के प्रति संवेदनशील कवि के काव्य–बोध का यह दूसरा आयाम है। इनकी प्रणय कविताओं में अन्तर्सम्बन्धों और सूक्ष्म संवेगों के साथ–साथ देहानुभूतियों का समावेश भी मिलता है। प्रणय में देह का अकुंठ और मुक्त स्वीकार इनकी कविताओं में अनुभूत हुआ है। देह की यह अनुभूति नितान्त अभिनव और मौलिक हो ऐसा नहीं है, पर वह जीवन्त और प्रभावशाली अवश्य है। प्राकृतिक छटा को आलंबन रूप में ग्रहण करते हुए कवि ने अपने भावों को उद्दीप्त करते हुए लिखा है कि –

''रात भर बरसती है बर्फ/प्यार की तरह/ छा लेती है घाटी को/
मुझ पर भी छा जाती है/पहली बर्फ सा यौवन/
झरते जल–सा निर्मल सौन्दर्य/ 'बाहें फैलाए देवदारू सी उमंग/
गर्म सौते–सा वह स्पर्श।'
तुम्हारी देह ही तो है/बर्फ से ढ़की वह घाटी/
मुझे तुम तक पहुँचाती है।''[9]

Copyright © 2016 Published by kaav publications. All rights reserved

उपर्युक्त संवेदनात्मक अनुभूति एवं अभिव्यक्ति की प्रमुख प्रवृतियों के अतिरिक्त अन्य प्रवृतियों के अंतर्गत भाषायी संरचना में बिम्ब बाहुल्यता, भाव गांभीर्य, सृजनात्मक प्रखरता, कलात्मकता श्रेष्ठता, प्रच्छन्न गीतकारिता, सौन्दर्यवादिता, स्वाभाविक प्रश्नानुकूलता, जीवन्तता, मुक्त छंद के प्रति मोह, व्यक्तिवादिता, तादात्म्यता, मरुस्थल में जल की, अन्तरसम्बन्धों में प्रेम की, ईश्वर में स्वतन्त्र वरण एवं संघर्ष की और शब्द में अर्थच्छटाओं की खोज इत्यादि प्रवृतियों को इनके कविता संग्रहों में देखा जा सकता है।

श्रीराम वर्मा के अनुसार– *''नंद किशोर आचार्य आधुनिक कवियों में सर्वथा अलग है दरअसल वे उज्जवल चेतना के ऐसे कवि है जिनमें पानीदार चमक है।''*

अज्ञेय की सम्मति में– *''निकट भविष्य में ऐसी स्थिति आ जायेगी कि जिस प्रकार हम कुछ कवियों को सागर के कवि या कुछ कवियों को पर्वतीय सौन्दर्य के कवि के रूप में याद करते है उसी तरह नंद किशोर आचार्य को 'मरुस्थल के सौन्दर्य के अद्वितीय कवि' के रूप में हमारे सामने रखेंगे उनकी कविता एक नयी दिशा की ओर संकेत करती है, एक नयी दृष्टि का प्रमाण देती है।''*

रमेश चन्द्र शाह– *''शब्द भूले हुए' की कविताएँ अधेड़ होने की ओर गरिमापूर्ण अधेड़ होने के प्रक्रियागत उन्मोचन की कविताएँ हैं ..... यह एक ऐसा स्वीकार है जो समय द्वारा बदलने जाने को भी समय को बदलने जैसा अर्थ और मूल्य प्रदान करता है।''*

उपर्युक्त सभी विचारों से यह प्रमाणित होता है कि आचार्यजी की संवेदेनात्मक अनुभूत को सूक्ष्म अभिव्यंजना अपने आप में कितनी प्रबल एवं सशक्त है। इनका रचना संसार छोटी–छोटी घटनाओं या संवेदनाओं की सशक्त भाषिक संरचना रही है जो आने वाली नई पीढ़ी के कवियों के लिए पढ़त की पगडंडियों सदृश्य नये मार्ग खोलने का माध्यम होगी। जिस पर चल कर ही नई अनुभूतियाँ को साकार किया जाना अनुपम कृत्य होगा।

संदर्भ सूची

1. बच्चन सिंह, *हिन्दी साहित्य का दूसरा इतिहास,* राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, (2005) पृ. सं. 423
2. कविता कभी नहीं हारती (लेख), नंद किशोर आचार्य, *रचना का सच,* वाग्देवी प्रकाशन, बीकानेर, 1986, पृ. सं. 170
3. डॉ प्रकाश आतुर, *राजस्थान की हिन्दी कविता,* संघी प्रकाशन, जयपुर, 1979, पृ. सं. 252
4. प्रो. महेन्द्र चतुर्वेदी एवं प्रो. तारकनाथ वाली, *साहित्यिक पारिभाषिक शब्द कोश,* बुक्स एन बुक्स, दिल्ली, 1992, पृ. सं. 305
5. वही पृ. सं. 149
6. वही पृ. सं. 149
7. मधुमति, *राजस्थान साहित्य अकादमी, उदयपुर,* जुलाई–अगस्त, 2000 पृ. सं. 93
8. नंदकिशोर आचार्य, *जल है जहाँ,* सूर्य प्रकाशन मंदिर, बीकानेर, (1984) 2004, पृ. सं. 53
9. मधुमती, *राजस्थान साहित्य अकादमी, उदयपुर,* मार्च, 1979 पृ. सं. 59

Copyright © 2016 Published by kaav publications. All rights reserved